



रांची। झारखण्ड के राज्यपाल डॉ. सैयद अहमद को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन।



शांति सरोवर, हैदराबाद। मुख्यमंत्री एन.किरण कुमार रेड्डी को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन।



शिमला। मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।



विले-पारले, मुम्बई। 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं प्लेबैक सिंगर सोनु निगम, ब्र.कु.किरण बहन एवं ब्र.कु.मीता बहन।



पांडिचेरी। मुख्यमंत्री थीरू एन.रंगास्वामी को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.कविता बहन।



देहरादून। उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा को 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।

शांति के लिए मेरी प्रतिज्ञा

त्रैमासिक सेवा कार्य योजना का आयोजन

संयुक्त राष्ट्र एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, भारत के कोलाबेरेशन (UNIC) के द्वारा 21 सितम्बर अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के दिन 'शांति के लिए मेरी प्रतिज्ञा' सेवा कार्य योजना का लॉन्चिंग न्यू दिल्ली के 'सिरोफोट ऑडिटोरियम' और मुम्बई के 'भाई दास हॉल' में 21 सितम्बर 2012 को होगा। और यह योजना 21 दिसम्बर 2012 तक चलेगी। इस योजना में सर्व स्वैच्छिक संगठन, स्कूल, कॉलेज, सोसायटी, बैंक कार्यालयों में मेरी प्रतिज्ञा का जायेगा। उसमें मिनट शांति का तथा उसके साथ मेडिटेशन की



टा:ला:डा, तथा सरकारी 'शांति के लिए फार्म भरवाया सभी को 10 दान देना होगा राजा राजा गममें टी भां

उपलब्ध करवाई जायेगी। जिससे कि भाग लेने वाला हर व्यक्ति स्वयं में शांति का अनुभव कर सके और विश्व को शांति का दान दे सके। ब्रह्माकुमारी संस्थान के हर सेवाकेंद्र द्वारा यह कार्यक्रम शहर, कस्बा, गांव में आयोजित किया जायेगा। इस सम्बन्ध में अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:- फोन नं. - 011-26490450 ईमेल:- shanti@bkivv.org

परवरिश ने बनाया अर्श और फर्श

हर इंसान को जन्म और मृत्यु के बीच से गुजरना ही होता है। किसी की यह यात्रा लम्बी तो किसी की छोटी होती है। इस यात्रा में किसी को अच्छे व बुरे के प्रभाव का सामना करते अपनी मंजिल को साकार रूप दे पाता है और कोई नहीं। जीवन यात्रा में अच्छे संग, परवरिश व हुनर का महत्व कम नहीं है। अच्छे संग की परवरिश उनके संकल्प को साकार करने की नींव बन जाती है। ऐसा ही आज के ताकतवर राष्ट्र के राष्ट्रपति बाराक ओबामा और उनके भाई की है।

एक भाई दुनिया का सबसे ताकतवर माना जाने वाला इंसान और दूसरा दारु और गरीबी का मारा कंगाल। इसे क्या कहेंगे? बहुत से लोग इसे किस्मत कहते हैं। हालांकि हम इसे किस्मत से ज्यादा परिस्थिति का खेल कहेंगे। भाग्य और परिस्थिति के खेल में क्या फर्क है? फर्क है। लेकिन पहले जरा इस संदर्भ को जान लें जिनकी बातों की जा रही है।

हम बात कर रहे हैं अमरीकी राष्ट्रपति बाराक ओबामा और केन्या में रहने वाले उनके सौतेले भाई जार्ज ओबामा की। दोनों के बाप एक थे, लेकिन माताएं अलग-अलग थीं। बाराक ओबामा की माता अमरीकी और जार्ज ओबामा की माँ केन्याई। यही फर्क है। दरअसल, हम मान लेते हैं कि संतान को लायक बनाने में बड़ा हाथ पिता का होता है जबकि सच ये है कि औलाद को संस्कार देने का काम 'माँ' करती है। अब बाराक ओबामा और जार्ज ओबामा की कथा फिल्म बनकर न जाने कब सामने आयेगी, लेकिन हमारे हिन्दी फिल्म वाले तो बिछड़े भाइयों पर पचासों फिल्म बना चुके हैं। दो भाई बिछड़ जाते हैं। एक का पालन-पोषण धनी, लेकिन बेहूदा परिवार में होता है और दूसरे को परवरिश गरीब, लेकिन संस्कारशील परिवार में होती है। धनी परिवार वाला बदमाश और गरीब परिवार वाला अच्छा इंसान बनता है। अर्श और फर्श की दास्तान यही है। परवरिश बड़ी चीज है। इसीलिए एक बाप अपने बेटों से कहता है - हुनर सीखो। हुकूमत और दुनिया की दौलत पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। सोने-चांदी में खतरा है। लेकिन हुनर ऐसा सोना है जो कभी नहीं सूखता। हमारी नानी कहती थी - जिसे बचपन में ही अदब नहीं सिखाया जाता तो उसमें बड़ा होने पर भी गुण नहीं आते। अब ऐसे लोगों को कमी नहीं, जो बाराक की किस्मत से जलन रखते होंगे, पर वे भूल जाते हैं कि ओबामा ने अपने स्वप्नों को पूरा करने में कितनी रातें काली की हैं। अर्श पर बड़े हुए लोगों से रश्क करने वाले उनके हुनर और लगाव को भूल जाते हैं। एक आदमी थक कर सफर छोड़ बैठा, तभी एक अक्लमंद ने कहा दौड़ लगाने और फिर सफर छोड़कर बैठने से तो बेहतर है चलते रहो और थक जाने पर सुस्ता लो और फिर चल पड़ो। लिंकन और ओबामा किस्मत से नहीं, मेहनत से अर्श पर हैं और जो भाग्य भरोसे रहे वे आज भी फर्श पर ही रेंग रहे हैं।

ड्रामा के हर दृश्य को कैसे देखें....?

पिछले अंक में हमने बात की थी कि हमें किन चीजों से खुशी मिल रही है। हम अभी तक ये सोचते थे कि टी.वी. देखने या फिल्म देखने या किताब पढ़ लेने से हमें खुशी मिलती है। कुछ समय तक मेरे थॉट्स, जो मुझे तंग कर रहे थे, परेशान कर रहे थे, वो मुझे उनसे दूर ले जाते हैं। जिससे मैं किसी और चीज में व्यस्त हो जाती हूँ। लेकिन फिर ये बात समझ में आयी कि क्यों कहा जाता है कि टी.वी. देखना या फिल्म देखना बुरी आदत बन सकती है, क्योंकि जैसे ही हम वहां जो परिस्थिति बन रही थी उसमें इनवॉल्व हो जाते हैं और उन्हें अपना थॉट जो हम क्रियेट कर रहे हैं, उसे चूने का अधिकार हम उस परिस्थिति को दे देते हैं। ये बड़ी जटिल बात थी लेकिन जब हम उसको पूरा करते जायेंगे, अनुभव करते जायेंगे, तब हमें समझ में आता जायेगा। इसी बात को थोड़ा और आगे बढ़ाते हैं।

प्रश्न:- अब मैं समझती जा रही हूँ शिवानी बहन कि आप रोज हमारे साथ डाइंग रूम में होते हैं, बात कर रहे होते हैं, यह भी तो आपके साथ एक यात्रा ही है। हर बार जो हमारा अनुभव है, हम बात करते हैं, कोशिश करते हैं कि यहां समझें। फिर जाकर उसे पूर्ण करने की कोशिश करते हैं। जब मैं आपके साथ टी.वी. के किसी भी प्रोग्राम में या फिल्म में या नॉवल में रूचि ले रही होती हूँ तो उस समय कौन-सी घटना घटित होती है?

उत्तर:- हम ऐसा नहीं कह सकते हैं कि हम ये नहीं देखें, आप ये चूज करें कि हमें क्या देखना है क्योंकि सूचना तो हमारे अंदर भरी जा रही है। सिर्फ अब ये ध्यान रखें कि देखते हुए भी कैसे देखें। इसे हम दोनों जगह प्रयोग कर सकते हैं, जैसे मूवी या टी.वी. देखते हुए कैसे देखें। वही चीज फिर आपके दिन-प्रतिदिन के जीवन में आयेगी कि जो ड्रामा सारा दिन चल रहा है उसे हम ड्रामा ही कहेंगे क्योंकि हमारे जीवन की यात्रा भी तो एक ड्रामा ही है। अब यहां पर प्रश्न उठता है कि हम इसे ड्रामा क्यों कहेंगे? क्योंकि जीवन रूपी ड्रामा में भी एक सीन के बाद दूसरा सीन आता जाता है और इस ड्रामा

श्वशुभुमा जीवन् जीवन् की कला (अवेकनिंग विश्व ब्रह्माकुमारीज़ से)



-ब.कु.शिवानी

में बहुत सारे नायक शामिल होते हैं। दोनों तरफ हमें ये सिखने को मिलता है कि ड्रामा की हर सीन को कैसे देखें। जब हम मूवी देखते या टी.वी. देखते हैं तो बीच-बीच में अपने-आपको चेक करके देखें कि हमारा मन कैसे-कैसे थॉट क्रियेट कर रहा है।

प्रश्न:- आज जब मैं आ रही थी तो एक घटना घटित हुई। पहले मैं कुछ अपने बारे में सोच रही थी। उसी बीच ड्राइवर ने गाना चला दिया वो मेरा मन पसंद गाना था। एकदम से मेरा मन हुआ और मैं गाना सुनने लग गयी। और जो मैं अपने बारे में सोच रही थी उस थॉट को तो मैं भूल ही गयी। लेकिन मैंने इस बार चाहा कि जो मैं सोच रही हूँ वो करती रहूँ। लेकिन गाने के शब्दों का आकर्षण इतना अधिक था कि शब्द ना सिर्फ मुझे इन्वॉल्व करते गये बल्कि वैसी भावना भी क्रियेट होती गई। तब मैंने सोचा कि नहीं, मुझे भावना में बहना नहीं है और मुझे वापिस अपने थॉट पर आना है लेकिन यह इतना सरल नहीं था क्योंकि मैं तो उसमें ही खुश हो रही थी!

उत्तर:- वो एक उत्तेजना थी, जो मेरे अंदर वैसी भावनायें उत्पन्न कर रही थी। खुशी और दर्द, दोनों चीजें हार्मोन्स तो स्रावित करती ही है बाँडी के अंदर और शरीर को सुचारू रूप से चलाने के लिए माइंड को दोनों प्रकार के हार्मोन्स की आवश्यकता होती है, यदि मैं स्टेबल रहती हूँ तब। अगर हमने प्रैक्टिस नहीं किया है तो इसका विकास करने में आवश्यकता से अधिक समय लगता है। लेकिन मेरे शरीर की कुछ आदतें ऐसी होती हैं जिसे उन हार्मोन्स की आदत पड़ी हुई होती है। तो मुझे कुछ ऐसा बाहर से चाहिए होता है जो उसे उत्तेजित करें। वो उत्तेजना मेरे अन्दर इमोशन्स क्रियेट करेगा और जैसे ही वो इमोशन्स क्रियेट होंगे तो बाँडी के अंदर भी वो हार्मोन्स स्रावित होंगे तो मैं अच्छा महसूस करूँगी, जैसे कि मुझे वो चीज मिल गयी जो मुझे चाहिए थी। फिर भले ही वो दर्द के इमोशन्स हो, एड्रीनल स्रावित हो लेकिन वो स्रावित हुआ ना, वो शरीर को चाहिए था और वो स्रावित हुआ। जब मैंने अच्छा महसूस किया तो मुझे खुशी हुई। आप जानते हैं कि ये मुझे चाहिए जो कि मुझे अच्छा लगता है, जिसके लिए मैं आधे घंटे से चिल्ला रही थी। आप चिल्लाने के बाद कैसे अच्छा महसूस कर सकती हैं, नहीं तो ये कोई तर्क नहीं है। (क्रमशः)